

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्रसाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० ११] नई दिल्ली, मंगलवार, जनवरी १८, १९७२/पी० २८ १९७३

No. 11] NEW DELHI, TUESDAY, JANUARY 18, 1972/PAUSA 28, 1893

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed
as a separate compilation

DEPARTMENT OF ATOMIC ENERGY

NOTIFICATION

New Delhi, the 11th January 1972

No. 1/24/72-M.—On December 30, 1971, the death occurred in Trivandrum of Dr. Vikram Ambalal Sarabhai, Secretary to the Government of India in the Department of Atomic Energy, Chairman, Atomic Energy Commission and Chairman, Indian Space Research Organisation.

In his passing, India loses an outstanding scientist.

To Dr. Sarabhai fell the difficult task of succeeding that great pioneer, Dr. Homi Jehangir Bhabha. Where a lesser man would have been daunted, Dr. Sarabhai accepted the challenge and threw himself into his work with that restless energy and imagination which were so characteristic of him. As head of India's prime scientific institution, he pursued some of Dr. Bhabha's dreams to fruition, and greatly enriched his legacy in the field of atomic energy.

It was given to Dr. Sarabhai not merely to consolidate the vision of his predecessor, but to push Indian science into new quests. Pioneer and prime architect of space research in India, he opened new vistas for its development. He brought together a band of devoted young scientists at the Physical Research Laboratory, Ahmedabad and the Space Establishment at Thumba, who dedicated themselves under his leadership to the development of space science. The first fruits of the new-found confidence in this field were the rocket launching facilities at Thumba and Sriharikota, the work undertaken at the Space Science and Technology Centre and other related units, and the construction of the Satellite Communication Earth Station at Arvi. The powerful impress left by Dr. Sarabhai on these institutions, probing the latest frontiers of scientific knowledge, perhaps represent his most enduring bequest to the advancement of Indian science.

A warm humanist, Dr. Sarabhai passionately believed that a scientist ought not to pursue pure knowledge for its own sake, but should be constantly alive to his obligations towards society. Throughout his life, he dedicated himself wholeheartedly to this ideal. He conceived of science as a hand-maiden to human betterment. Thus were born his projects for the utilisation of satellite television as an aid to agricultural extension, family planning and mass education, particularly in the rural areas, and for the use of atomic energy in agro-industrial complexes and the desalination of water.

Born in 1919, Dr. Vikram Sarabhai was educated at the Gujarat College, Ahmedabad and at St. John's College, Cambridge in the United Kingdom. During the Second World War, he worked as a Research Scholar in the field of Cosmic

Rays at the Indian Institute of Science, Bangalore under the late Dr. C. V. Raman, Nobel Laureate, later returning to Cambridge to conduct research on photo-fission at the Cavendish Laboratory. In 1947, he received his doctorate from the University of Cambridge. He was Professor of Cosmic Ray Physics and Director of the Physical Research Laboratory at Ahmedabad and Director of the Space Science and Technology Centre, Trivandrum. His major interest in research centered on the astro-physical implications of cosmic ray time variations. The work done by him in collaboration with his students at the research stations of Ahmedabad, Gulmarg, Kodaikanal, Trivandrum and Chacaltaya in Bolivia led to the discovery of the new solar relationships of cosmic ray variations. During the past ten years, he was Visiting Professor at the Laboratory for Nuclear Sciences at the Massachusetts Institute of Technology, Cambridge, USA.

He was awarded the Shanti Swarup Bhatnagar Memorial Award for Physics in 1962, and Padma Bhushan in 1966.

Dr. Vikram Sarabhai was a distinguished member of the Indian scientific community—a Fellow of the Indian Academy of Sciences and the Indian National Science Academy, a member of the National Council for Science Education, Honorary Director of the Indian Institute of Management, Ahmedabad and a Fellow of several other learned societies in India.

In the international scientific world, Dr. Sarabhai distinguished himself as a member of the International Pugwash Continuing Committee, the United Nations Scientific Advisory Committee, and the Inter-Union Commission of Solar Terrestrial Physics of the International Council of Scientific Unions. He was elected Scientific Chairman of the United Nations Conference on the Peaceful Uses of Outer Space held in Vienna in August, 1968 and President of the Fourteenth Session of the General Conference of the International Atomic Energy Agency in September, 1970. He was also one of the Vice-Presidents of the United Nations Fourth International Conference

on the Peaceful Uses of Atomic Energy held in Geneva in 1971.

In the death of Dr. Sarabhai, the nation has lost an eminent scientist who distinguished himself in diverse fields; an organiser of unique ability who left the imprint of his genius on several scientific institutions of his creation and above all, an ardent patriot who dedicated himself to the application of science and technology for the welfare of the nation.

The Government of India extends its deepest sympathy to Smt. Mrinalini Sarabhai, Smt. Sarlaben Sarabhai and other members of his family in this hour of grief—a grief which is shared by the entire nation.

R. BHAKTAVATSALU, Addl. Secy.

परमाणु ऊर्जा विभाग

अधिसूचना

नई दिल्ली, 11 जनवरी, 1972

संख्या 1/42/72-एम—परमाणु ऊर्जा विभाग में भारत सरकार के सचिव, परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष तथा भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन के अध्यक्ष, डाक्टर विक्रम अम्बालाल साराभाई का देहान्त त्रिवेन्द्रम में 30 दिसम्बर, 1971 को हो गया।

उनके निधन से भारत ने अपना एक महान् वैज्ञानिक खो दिया।

भारतीय वैज्ञानिकों के महान् पथ प्रदर्शक, डाक्टर होमी जहांगीर भाभा के उत्तराधिकारी के रूप में कार्य करने का कठिन भार डाक्टर साराभाई के कंधे पर आ पड़ा था। इस भार से कोई भी साधारण व्यक्ति लड़खड़ा जाता, किन्तु डाक्टर साराभाई ने चुनौती को स्वीकार किया और बे अनावरत काम करने की क्षमता तथा सूझबूझ के अपने विलक्षण गुणों के साथ अपने काम में जुट गये। भारत के सबसे बड़े वैज्ञानिक संगठन के अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने डाक्टर भाभा के कुछ स्वप्नों को साकार किया तथा परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्य को बहुत आगे बढ़ाया।

डाक्टर साराभाई ने न केवल डाक्टर भाभा के स्वप्नों को मूर्त रूप देने का उत्तरदायित्व सम्भाला, अपितु उन्होंने भारत में वैज्ञानिक अनुसन्धान के काम को नयी दिशाएँ भी दी। भारत में अन्तरिक्ष अनुसन्धान कार्यक्रम के पथ प्रदर्शक तथा प्रमुख कर्णधार के रूप में उन्होंने इस क्षेत्र में विकास के नये अध्याय खोले। उन्होंने भौतिक अनुसन्धान प्रयोगशाला, अहमदाबाद तथा अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन, थुम्बा में कर्मठ युवक वैज्ञानिकों का एक दल तैयार किया जो उनके नेतृत्व में अन्तरिक्ष विज्ञान के विकास के काम में जुट गया। इस क्षेत्र में नवीन उत्साह तथा विश्वास के साथ जो कार्य किया गया, उसके फलस्वरूप ही थुम्बा तथा श्रीहरिकोट में राकेट प्रक्षेपण केन्द्रों की स्थापना हुई, अन्तरिक्ष विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केन्द्र एवं अन्य सम्बन्धित यूनिटों में कार्यान्वयन किया गया तथा आर्वी में भू-स्थित उपग्रह संचार केन्द्र का निर्माण हुआ। विज्ञान के क्षेत्र में आधुनिकतम जानकारी प्राप्त करने में लगे इन संस्थानों पर डाक्टर साराभाई ने अपनी जो गहरी छाप छोड़ी है वह सम्भवतः भारत में विज्ञान की प्रगति को उनकी चिरस्थायी देन है।

डाक्टर साराभाई एक महान् मानवतावादी थे तथा उनका यह दृढ़ विश्वास था कि किसी भी वैज्ञानिक को अपनी ही तुष्टि के लिए केवलमात्र ज्ञान की प्राप्ति नहीं करनी चाहिये, अपितु उसे समाज के लिए अपने दायित्वों के प्रति भी सदैव जागरूक रहना चाहिये। वे अपने इसी आदर्श की पूर्ति के लिए जीवन भर सच्चे हृदय से कार्यरत रहे। वे विज्ञान की कल्पना मानव-कल्याण में सहायक एक शक्ति के रूप में करते थे। देश में, विशेषतः देहाती क्षेत्रों में, खेती-बाड़ी के तरीकों के बारे में जानकारी देने, परिवार नियोजन का प्रचार करने तथा जन साधारण को शिक्षित बनाने में उपग्रह की सहायता से टेलीविजन कार्यक्रम प्रसारित करने, तथा परमाणु ऊर्जा की सहायता से तैयार की गई बिजली पर आधारित कृषि-उद्योग-सम्मिश्रों की स्थापना करने और पानी का अपक्षारीकरण करने की परियोजनाएँ उनकी इसी विचारधारा की उपज हैं।

डाक्टर साराभाई का जन्म सन् 1919 में हुआ था। उन्होंने अहमदाबाद के गुजरात कालेज तथा ब्रिटेन में कैम्ब्रिज के सेंट जॉहन कालेज में शिक्षा प्राप्त की थी। द्वितीय महायुद्ध के दिनों में, उन्होंने नोबल पुरस्कार विजेता डाक्टर सी० बी० रमन के निर्देशन में बंगलौर स्थित भारतीय विज्ञान संस्थान में कास्मिक किरणों के क्षेत्र में एक रिसर्च स्कालर के रूप में काम किया तथा उसके बाद उन्होंने कैम्ब्रिज जाकर के बैडिश प्रयोगशाला में फोटो-विखण्डन से सम्बन्धित अनुसन्धान किये। सन् 1947 में वे कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा डाक्टरेट की उपाधि से विभूषित किये गये। तदुपरान्त, उन्होंने अहमदाबाद स्थित भौतिक अनुसन्धान प्रयोगशाला में कास्मिक किरण भौतिकी के प्रोफेसर तथा उसी प्रयोगशाला के निदेशक के पद पर, तथा त्रिवेन्द्रम स्थित भारतीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी केन्द्र के निदेशक

के रूप में कार्य किया। अनुसन्धान कार्य में उनकी रुचि मुख्यतः कास्मिक किरणों के समय में होने वाले परिवर्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाले खगोल-भौतिकी सम्बन्धी प्रभावों पर केन्द्रित रही। उन्होंने अपने शिष्यों के सहयोग से अहमदाबाद, गुलमर्ग, कोडाडकनाल, त्रिवेन्द्रम तथा बोलिविया में चकालताया स्थित अनुसन्धान केन्द्रों में जो खोजें की उनसे कास्मिक किरणों के समय में होने वाले परिवर्तनों तथा सूर्य के बीच स्थित सम्बन्धों पर नया प्रकाश पड़ा। वे पिछले दस वर्षों तक अमरीका के कैम्ब्रिज नगर में स्थित मैसाच्युट्स इन्स्टीच्यूट ऑफ टैक्नालाजी की न्यूक्लीय विज्ञान प्रयोगशाला के अतिथि प्राध्यपक रहे।

उन्हें सन् 1962 में भौतिकी के क्षेत्र में काम करने के लिए शान्तिस्वरूप भटनागर स्मारक पुरस्कार दिया गया था तथा सन् 1966 में वे पद्मभूषण से विभूषित किये गए।

डा० विक्रम साराभाई भारतीय वैज्ञानिक जगत के एक वैद्विप्यमान रत्न थे। वे भारतीय विज्ञान अकादमी के सदस्य, राष्ट्रीय वैज्ञानिक शिक्षक परिषद् के सदस्य, भारतीय प्रबन्धन संस्थान, अहमदाबाद के प्रबैतनिक निदेशक तथा भारत की अनेक अन्य विद्वद् संस्थाओं के सदस्य थे।

अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक जगत में, डा० साराभाई इण्टर नेशनल पब्लिश कंटीन्यूइंग कमेटी, संयुक्त राष्ट्र संघ की वैज्ञानिक सलाहकार समिति तथा वैज्ञानिक संघों की अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् के सौर स्थलीय भौतिकी सम्बन्धी इन्टर यूनिनयन कमीशन के सम्मानित सदस्य थे। वे, अगस्त, 1968 में, वियाना में आयोजित बाह्य अन्तरिक्ष के शान्तिपूर्ण प्रयोगों सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्र संघ सम्मेलन के वैज्ञानिक अध्यक्ष तथा मितम्बर, 1970 में, अन्तर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा अभिकरण की माघारण सभा के चौदहवें अधिवेशन में अध्यक्ष चने गए थे। वे, 1971 में, जैनेबा में आयोजित परमाणु ऊर्जा के शान्तिपूर्ण प्रयोगों सम्बन्धी राष्ट्र-संघ के चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के एक उपाध्यक्ष भी निर्वाचित हुए थे।

डा० साराभाई के निधन से भारत ने एक ऐसा महान वैज्ञानिक खो दिया जो विविध विषयों का विद्वान् था; एक ऐसा विलक्षण संगठन कर्ता था जिसकी योग्यता की अमिट छाप उसके द्वारा स्थापित विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों पर सदैव बनी रहेगी तथा सबसे भी बढ़कर एक ऐसा सच्चा देशभक्त था जो मदव राष्ट्र के कल्याण के लिए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के कार्य में रत रहा।

दुख की इस घड़ी में जबकि सारा देश शोकमग्न है भारत सरकार श्रीमती मृणालिनी साराभाई, श्रीमती सरलाबेन साराभाई तथा शोकाकुल परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करती है।

आर० भक्तवत्सलू आर सचिव।

